कन्नड की एक लोककथा

सीगड़ी मछली सूखी क्यों नहीं?

पंजे मंगेशकर राव

समुद्र के किनारे एक गाँव था। गाँव में एक मछुआरे का परिवार रहता था। उस परिवार में चार लोग थे – मछुआरिन, उसका पति, उनका एक बच्चा और मछुआरे की माँ। मछुआरा समुद्र से मछली पकड़कर लाता। मछुआरिन इन मछलियों को बाज़ार ले जाकर बेचती। जो मछलियाँ बच जातीं उन्हें बूढ़ी अम्मा धूप में सुखाती थी। और बच्चा? वो पड़ा-पड़ा रोता रहता।

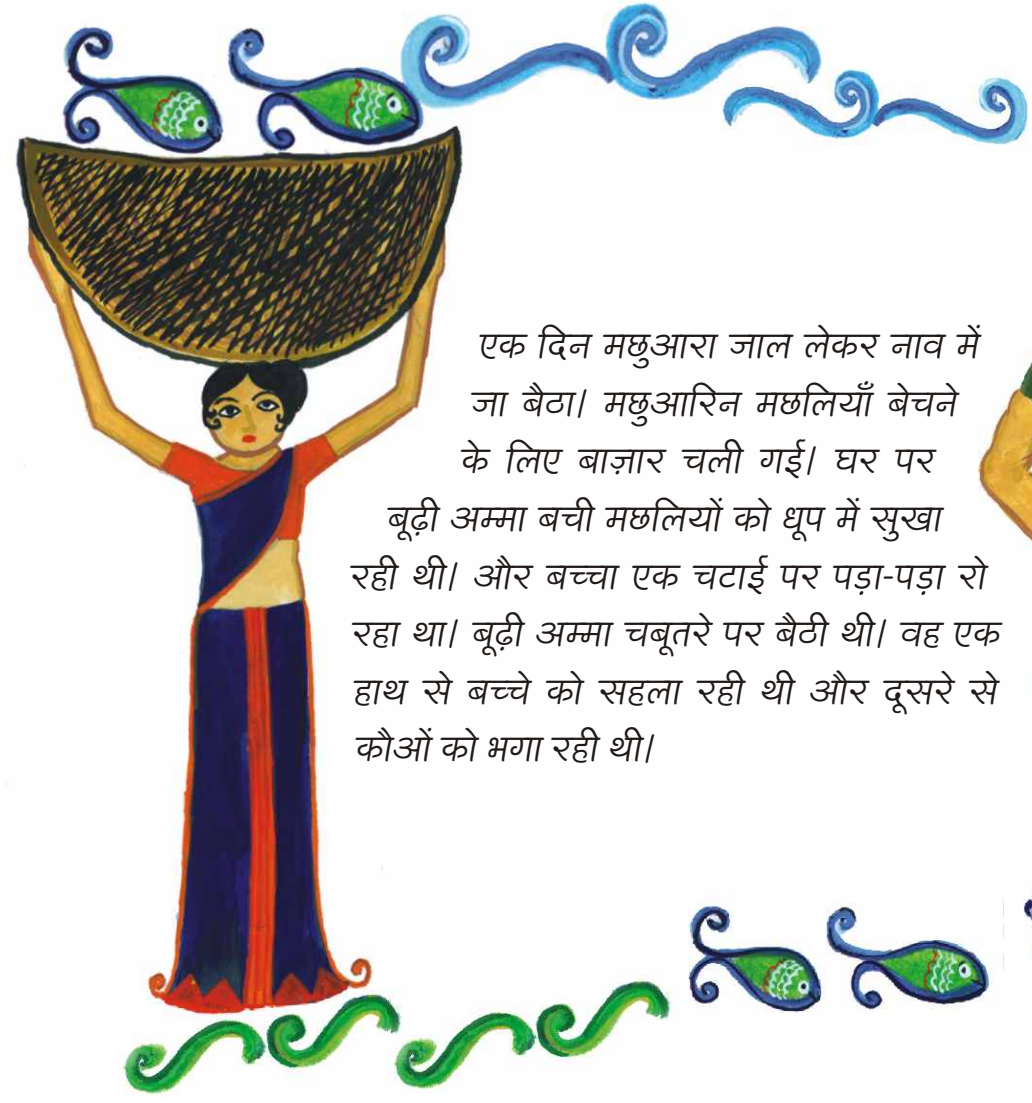

एक दिन मछुआरा जाल लेकर नाव में जा बैठा। मछुआरिन मछलियाँ बेचने के लिए बाज़ार चली गई। घर पर बूढ़ी अम्मा बची मछलियों को धूप में सुखा रही थी। और बच्चा एक चटाई पर पड़ा-पड़ा रो रहा था। बूढ़ी अम्मा चबूतरे पर बैठी थी। वह एक हाथ से बच्चे को सहला रही थी और दूसरे से कौओं को भगा रही थी।

शाम हो गई। समुद्र से मछुआरा और बाज़ार से उसकी बीवी लौटने ही वाले थे। बूढ़ी अम्मा ने सोचा, "शाम हुई, अब मैं सीगड़ी मछलियों को समेटकर अन्दर ले आऊँ।" उसने बरामदे में पड़ीं मछलियों को छूकर देखा। मछलियाँ अभी भी सूखी नहीं थीं।

बूढ़ी अम्मा बोली,
"सीगड़ी, ओ सीगड़ी! तुम क्यों नहीं सूखी?"

सीगड़ी बोली,

"बूढ़ी अम्मा,
बूढ़ी अम्मा, घास बढ़
गई है। मुझे धूप ही नहीं
मिली तो मैं कैसे सूखूँ?
मुझसे क्यों पूछती हो,
घास से पूछो।"

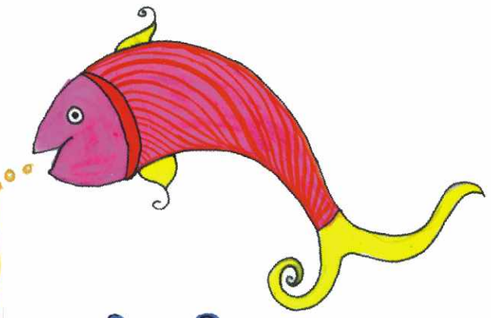

बूढ़ी अम्मा घास के
पास गई, "घास, ओ घास!
बता न, तू धूप के आड़े क्यों आई?"

घास ने जवाब दिया,
"बूढ़ी अम्मा, बूढ़ी अम्मा, बछड़े
ने मुझे नहीं खाया तो मैं क्या
करूँ? मुझसे क्यों पूछती हो,
बछड़े से पूछो!"

फिर बूढ़ी अम्मा
बछड़े के पास
गई। उसने पूछा,
"बछड़े, ओ बछड़े, तुमने
घास क्यों नहीं खाई?"
बछड़े ने कहा,

"बूढ़ी अम्मा,
बूढ़ी अम्मा, घर की औरत ने
मेरी रस्सी नहीं
खोली, तो मैं क्या करूँ?
तुम औरत से पूछो।"

तब तक मछुआरे की बीबी घर लौट आई।
बूढ़ी अम्मा उसके पास गई और
उससे पूछा, "तुमने बछड़े को
क्यो नहीं छोड़ा?"

उस पर मछुआरे की
बीबी ने कहा,

"बूढ़ी अम्मा,
जब बच्चे ने रोना ही बन्द
नहीं किया तो मैं बछड़े को
कैसे छोड़ती? तुम मुझसे
क्यों पूछती हो?
बच्चे से पूछो।"

तब बूढ़ी अम्मा बच्चे के पास गई और पूछा,
"बच्चे, ओ बच्चे, बता तूने
रोना बन्द क्यों
नहीं किया?"

बच्चे ने कहा, "बूढ़ी अम्मा,
बूढ़ी अम्मा, मुझे चींटी ने
काटा था तो मैं क्या करूँ?
चींटी से पूछो!"

बूढ़ी चींटी के पास गई,
"चींटी, ओ चींटी,
बताओ तुमने
बच्चे को क्यों काटा?"

चींटी ने कहा,

"बूढ़ी अम्मा,
बूढ़ी अम्मा, चटाई ने बच्चे
की राह रोकी। तुम चटाई
को लपेट लो और मुझे जाने दो,
तब मैं नहीं काटूँगी।"

बूढ़ी अम्मा ने झट-से बच्चे को उठाया, चटाई को लपेट दिया। चींटी बच्चे को काटे बगैर निकल गई। बच्चे ने रोना बन्द कर दिया। बच्चे की माँ ने बछड़े को खोल दिया। बछड़े ने घास खा ली। और फिर धूप में मछली सूख गई। बूढ़ी अम्मा ने सीगड़ी मछलियाँ समेटीं और अन्दर ले गई।

चित्रः इन्दु हरिकुमार